केशव शरण की पांच ग़ज़ले

1

निगाहें लगी हैं जिधर हम जहाँ हम
खुले रूप से फिर मिलेंगे कहाँ हम

सभी दे रहे हैं सज़ाएँ इकट्ठे
अकेले ख़तावार केवल यहाँ हम

पता दो जहाँ प्यार की क़द्र होती
यहाँ से उठें और चल दें वहाँ हम

कहाँ एक पत्थर कहाँ एक शीशा
बहुत फ़र्क़ है ये कहाँ वो कहाँ हम

टिकेगा नहीं एक ज़ालिम वहाँ फिर
ग़दर की शुरुआत कर दें जहाँ हम

————————————

2

भेंट में मिल गया मुबारक हो
शाल तुझको नया मुबारक हो

शोख़, बेबाक़ हुस्न की नज़रें
आड़, परदा, हया मुबारक हो

ज़ुल्म हम पर सभी सितम हम पर
दूसरों पर दया मुबारक हो

रात को चाँद से गये टकरा
ये हसीं वाक़या मुबारक हो

कपि इसी पेड़ के तले भींगे
नीड़ तुझको बया मुबारक हो

————————————
3
समीप आता न देखता हूँ
किसे हवा में पुकारता हूँ

ग़ज़ब सुरा थी, सुरूर अब तक
नहीं उतरती न चाहता हूँ

असर ख़िज़ां का ज़रा रहेगा
चमन बराबर सँवारता हूँ

गिरूँ न मैं भी, गिरे न मन भी
बहुत सँभलता, सँभालता हूँ

पसंद आती न गद्य दुनिया
ग़ज़लपुरम् में विराजता हूँ

————————————
4
उसी इक ओर फेरा चल रहा है
किसी से इश्क़ तेरा चल रहा है

बताऊँ हाल क्या महबूब का मैं
विरह का दौर मेरा चल रहा है

जुन्हाई चाँद की देखी न अब तक
अँधेरे का अँधेरा चल रहा है

न कोई यार, रिश्तेदार बैठा
बहुत सुनसान डेरा चल रहा है

कभी इसमें कभी उसमें फँसा हूँ
ग्रहों का नित्य घेरा चल रहा है

————————————
5

रवि चमड़ी झुलसा देता है
घन पानी बरसा देता है

पर्वत इस्थिर कर देते हैं
वन मन को हरसा देता है

सूना अम्बर भी क्या शै है
दिव्य छटा सहसा देता है

क्यों जीना है कैसे जीना
द्रुम–जीवन दरसा देता है

तृप्ति हृदय की कुछ बूँदों से
रूप–जलधि तरसा देता है

एस 2/564 सिकरौल, वाराणसी 221002, मोबाईल– 9415295137